RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-07
July-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में परम्परा और आधुनिकता

हेमा साकेत तिवारी

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 05 July 2018

ABSTRACT

साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। साहित्य के माध्यम से ही मानवीय विचारों एवं भावनाओं का साकार रूप प्राप्त होता है। मानव समाज में जो घटित होता है, साहित्य न केवल उसे प्रदर्शित करता है, वरन् साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर समाज को प्रभावित व प्रेरित भी करता है, इसलिए कहा जाता है कि साहित्यकार समाज की उपज होता है उसकी संरचना में युग धर्म भी झलकता है। कथाशिल्पी विष्णु प्रभाकर एक ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने आधुनिकता के नाम पर हो रहे मानवीय मूल्यों के शोषण को उजागर किया है। उन्होंने आधुनिक जीवन से जुडा मानवीय समस्याओं को न केवल उद्घाटित किया है बल्कि उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है।

प्रयोजन :

विष्णु प्रभाकर जी ने सत्य, ईमानदारी तथा निष्ठा पर अधिक बल दिया है। उनकी रचनाओं में रूढियों व मिथ्या आडंबरों के लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने मानवीय संवेदनाओं, दुखों व तकलीफों को आत्मसात करते हुए लिखा है। विष्णु प्रभाकर साहित्य के क्षेत्र में किसी मत या वाद से न जुड़कर स्वतंत्र रूप से साहित्य सेवा में सतत संलग्न रहे हैं। भारतीय स्वंतत्रता प्राप्ति के बाद की परिस्थितियों में स्वस्थ जीवन मूल्यों की स्थापना ही उनका ध्येय रहा है।

विष्णु प्रभाकर का कथा साहित्य मानवीय भावनाओं, विचारों तथा उनकी समस्याओं को प्रस्तुत करता हैं, साथ ही साथ समाधान भी प्रस्तुत करता है। वे समाधानों के प्रति जागरूक रहने तथा उसकी प्रतिक्रिया का विश्लेषण करने में सिध्द हस्त हैं। विष्णु प्रभाकर जी ने साहित्य को प्राय: सभी विधाओं में सृजनात्मक क्षमता की परिचय दिया है।

प्रस्तावना :

विष्णु प्रभाकर के कथा साहित्य में गॉव हो या शहर, अशिक्षा और अज्ञान के कारण आज भी रूढ़िवाद तथा जीर्ण—शीर्ण रूप मे अपने अस्तित्व को भारतीय पुरानी परंपराओं एवं अंधविश्वास ने यथावत् रूप में जनता के सामने असली रूप में खड़ी दिखाई दे रही हैं। अर्थात रूढ— सत्यों की चिन्तनहीन स्वीकृति वहॉ की सामाजिक,धार्मिक एवं सांस्कृतिक व्याधि है। लोक—प्रचलित विश्वास ही इनके जीवन के सत्—असत् के नियंता है जबकि वास्तविकता यह है कि उन लोक—विश्वासों का कोई दृढ़ आधार नहीं होता। भारतीय जीवन के दैनंदिन कार्य—व्यापारों में लोक—विश्वास अर्थात रूढ़ —सत्य एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। कार्यों और यात्राओं की तिथियॉ, शादी,व्याह, गृह—निर्माण आदि कार्य शुभ—अशुभ के विचारोंपरान्त ही प्रारम्भ होते हैं। और तो और बाल कटवाना, खेत जोतना, बोना, काटना आदि विशिष्ट दिनों में करना ही श्रेयस्कर माना जाता है।

''वास्तव में भारतीय मनुष्यों का जीवन लोक — विश्वासों से भरा हुआ है। मनुष्य के पैदा होने से मृत्यु पर्यन्त ये विश्वास उसे जकड़े,रहते हैं। सामान्यत: गॉवों में विभिन्न धार्मिक लोकों की भी चर्चा होती है, जैसे मृत्युलोक पितृलोक प्रेतलोक,देवलोक,स्वर्गलोक आदि। इनमे मृत्युलोक निम्न और स्वर्ग लोक उच्चमाना जाता है। मृत्युलोक से छुटकारा और स्वर्गलोक की प्राप्ति इनका लक्ष्य होता है। स्वर्ग लोक की कल्पना जीवन का कोई वास्तविक यथार्थ नहीं है.....अपितु यह उनका पवित्र विश्वास है और इसी से प्रेरित होकर वे लोग सत्कर्मो की ओर बढ़ते हैं।''[१]

किसी भी समाज में प्राचीन परंपराओं एवं रूढ़ियों की गहरी तहें जमी चली आ रही होती हैं। उनमें मिथ्या भय एवं अहंकार की प्रमुखता होती है। उसके साथ वैचारिक प्रतिबध्दता भी घनीभूत होती जाती है। इस अंध प्रतिबध्दता की श्रृंखला तोड़ने के लिए

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

व्यापक सहानुभूति की आवश्यकता अपरिहार्य होती है। किन्तु समाज में ऐसी रूढ़िगत मान्यताओं को तोड़ने के लिए व्यापक सहानुभूति एक साथ नहीं आती है, या नहीं आ पाती है। क्योंकि भारतीय समाज में आज भी मूल हीनता और रूढ़ियों का बोलबाला है। व्यक्ति अंधविश्वासों से ग्रस्त है। और ये रूढ़ियॉ जैसे भूत—प्रेत ओझा—सोखा, टोना—टोटका, नजर लगना, सिर—मंडन, तेरही, श्राध्द, बच्चे के जन्मपर सोहर गीत गाना, मृत महिलाओं के पैरों में कील ठोकना, बलि देना,निरिह पशुओं की बलि तथा भूतप्रेत.... संबंधी परिकल्पना एवं देवी देवताओं तथा पीर—पैगम्बरों की पूजा जैसी रूढ़ियॉ आज भी भारतीय जन—जीवन में यथावत बनी हुई हैं।

रूढ़ियों के विषय में रामदरश मिश्र जी कहते हैं—'' समसामयिक परिस्थितियों में विविध धर्मावलम्बियों एवं सुशिक्षित ग्रामीणों में प्रचलित भूत—प्रेत संबंधी विश्वास के सम्बन्ध बड़े व्यापक स्तर के बने हूए हैं। चमार चमरिया पूजता है, ब्राम्हण बरम पूजता है, क्षत्री डीह पूजता है, मुसलमान जिन्न पूजता हैं और सच तो यह कि सभी एक दूसरे के भूत को पूजते हैं.... और केवल भूत पूजते हैं। चमरिया, डीह, बरम सभी भूत हैं और भूत पूजा आज भी कम नहीं हुई है और सच बात तो यह है कि आजादी के बाद भी शिक्षा—दीक्षा का ठीक विकास नहीं हो पा रहा है। जो अनपढ़ गॅवार है वो भूत पूजते हैं, और जो—पढ़े लिखे हैं, जिन्हें अपने शिक्षित होने का गर्व है, वे पैसा पूजते हैं, स्वार्थ का भूत पूजते हैं, बेटे बेंचते हैं, घूस लेते हैं। चोर बाजारी करते हैं, देश के निर्माण के नाम पर विनाश की पटरियॉ बिछाते हैं।''[२]

इस प्रकार स्पष्टतम रूप में कहा जा सकता है कि भले ही शिक्षा का प्रचार—प्रसार समाज में हुआ है, किन्तु यह भी सच है कि पूराने दकियानूसी पंरपराओं वाले लोगों ने जिस रूढ़िवादी विचारों व परंपराओं को बनाया था, उन रूढ़ियों एवं परंपराओं को आज भी हमारा सभ्य शिक्षित समाज नकार नहीं पा रहा है, ठीक उसी रूप में उसे ढोता चला आ रहा है। ऐसे रूढ़िवादी चरित्र विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में भी यत्र—तत्र दिखाई देते हैं। दकियानूसी पंरपराओं व ढ़कोसलों को विष्णुजी ने बड़ी ही बारीकी के साथ अपने उपन्यासों में दिखाया है। जिसमें कहीं किसी के ऊपर देवी मॉ आती है तो कहीं चांद को देखकर उपवास तोड़ा जाता है, कहीं पोतो के जन्म पर खुशियॉ मनाई जाती हैं, तो कहीं शुभ—अशुभ जैसी रूढ़ियॉ आज भी भारतीय समाज में अपनी मौजूदगी का अहसास कराती रहती हैं।

भारतीय जन—जीवन में प्रायः प्रत्येक जाति व धर्म के लोग भूत—प्रेत, जिन्न, शुभ—अशुभ टोना—टोटका जैसी पुरानी अर्थहीन व घृणित रूढ़ियों में विश्वास रखते हैं। और यह भी देखा जाता है कि ये उनसे भयभीत होकर भी ऐसी दकियानूसी परंपराओं को मानने के लिए बाध्य होते हैं। अन्ततः विष्णुप्रभाकर जी के उपन्यासों में भारतीय समाज में प्रचालित भूत—प्रेत, छींक, साइत देखना, जैसी प्रकल्पनाओं तथा अंधविश्वासों के बड़े ही जीवंत चित्र प्रस्तुत हुए हैं।

रूढ़ियों व अंधविश्वासों के संबंध में डा. वी. पी.चौहान स्पष्ट कहते हैं—'' आर्थिक अभाव ग्रामीण वश सामाजिक रूढिगत मान्यता के कारण अनमेल विवाह भी होते हैं। बाल—लग्न आज भी समाज के निम्न वर्गो में कायम है। मॉ—बाप बच्चों की शादी करके सिर का भार उतार लेते हैं। बाप समाज के डर से बेटी की शादी का अपना फर्ज अदा कर देता है। वर छोटा हो या बड़ा अच्छा हो या बुरा या एकदम अयोग्य, पर माता—पिता को शादी करके अपने सिर का बोझ हल्का करना है या यों कहें कि समाज में चली आ रही एक वैवाहिक परंपरा को निभाना है।''[३]

विष्णु प्रभाकर के उपन्यास''संस्कार'' की 'रामों'उपर्युक्त वैवाहिक परंपरा की साक्षीहै।' रामों' अपने अल्पायु छोटे पति के साथ पति का कोई सुख भोग नहीं पाती और पतिव्रता प्रथा को ओ़ढ़कर रूढ़िगत मान्यताओं में जकड़ी नारी अपना पुरा जीवन समाप्त कर देती है। किन्तु दूसरी शादी नहीं करती है। ठीक इसी प्रकार के रूढ़िवादी प्रवृत्ति वाले चरित्र विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में सहज ही दिखाई देते हैं। ऐसे चरित्रों में—श्यामवर्ण वाली युवती द्रोपदी रामो, निशिकांत की मॉ,लाजवंती, कृष्ण—गोपाल, रामनाथ,शीला आदि।''[४]

निशिकान्त की मॉ जाति—पॉति, छुआ—छूत जैसी रूढ़ियों व परंपराओं को विशेष महत्व देती है, अतैव इसी कारण वह 'सुरैया' को एक मुस्लिम लड़की जानकर निशिकांत से विवाह करने को तैयार नहीं होती है, किन्तु यदि वह सुमित्रा या सावित्री बनकर अग्नि को साक्षी मान ले तो वह शुध्द समझकर उसे स्वीकार करने की बात कहती है, अर्थात सुरैया के

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

रूप में वह उसे किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करती है।

निशिकान्त और उसकी माॅ के वार्तालाप के माध्यम से ऐसी दकियानूसी परंपरा का पता चलता है।इस प्रकार कहा जा सकता है कि निशिकान्त की माॅ रूढिवादी विचारों से ग्रस्त एक ऐसी नारी है जिसमें माया, ममता, अपनेपन की भावनाएॅ जहाॅ कूट कूटकर समायी हैं,वहीं तमाम ढ़कोसले एवं दकियानूसी परंपरा एॅव रूढ़ियों से भी अपने को अलग नहीं कर पाती है। यह उसके चरित्र की सबसे बड़ी खूबी है।

विष्णु प्रभाकर जी के उपन्यासों का समष्टि रूप से अध्ययन करने पर यही प्रतीत होता है कि विष्णुजी के चरित्र–चित्रण की शैली अपने ढंग की अपूर्व है। राष्ट्रीय चेतनावाले पात्रों का व्यक्तित्व स्पष्ट और प्रभावशाली है। निरभिमानी, नि:स्वार्थी, त्यागी, निस्पृह, राष्ट्रसेवक होने के साथ–साथ उनमें भारतीय आदर्शों की प्रतिष्ठा प्रकृत रूप में है तथा अनुरूप व्यापार समन्वय से उनकी सजीवता आकर्षणपूर्ण है। पात्रों के चरित्रों में मानव अन्त: करण की विविध मनोवृत्तियों का विश्लेषण है। राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत इन चरित्रों के रूप में बाबा रामदास, पन्मलाराम, कुमार निशिकांत, जैसे राष्टीय चंतनावाले जीवंत चरित्रों का चित्रण हुआ है। राष्ट और समाज की समस्यायों की पूर्ण, व्यापक तथा गहरे ढंग से देखने का प्रयास करना एक ऐसासत्य है जिसके व्यापक वितान से कोई भी उपन्यासकार अछूता नहीं रह सकता । राष्ट्रीयता की भावना विष्णु प्रभाकर जी के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का स्वर भरती है। इन राष्ट्रीय चेतनावाले पात्रों के मन मंदीर में जैसा कि मैंने पहले ही स्पष्ट कर दिया है, स्वार्थ का भाव कहीं छू तक नहीं गया है, इनके हर एक रोम में जननह , जन्मभूमी के लिए पूर्ण समर्पण की भावना विद्‌यमान है, ये पात्र जहाँ समाज के लोगों की सेवा करते हैं वहीं आवश्यकता पडने पर हाथ में तलवार लेकर देश के विरोधियों के विरोध में खडा होने से भी नहीं सकुचाते हैं।

निशिकांत उपन्यास का नायक निशिकांत एक मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखता है और एक दफ्तर में क्लर्क के पद पर कार्यकरत है। सरकारी कर्मचारी होते हुए भी निशिकांत स्वंतत्र विचार भावना रखता है, किसी के अन्दर रहकर उसकी परवशता पसन्द नहीं है। निशिकांत राष्ट्र सेवक के रूप में पूर्णत: अर्पित है। उसके समर्पण की भावना का पता इस बात से चलता है कि आर्य समाज की दीक्षा ग्रहण करने के बाद वी चार प्रतिज्ञाएँ करता है, जो उसके राष्ट के प्रति अपनेपन की भावना को व्यक्त करती हैं, जैसे खछ्दर पहनना, अछूतों को अपने समान समझना, राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा करना मथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए काम करना आदि बातें निशिकांत में दिखाई देती हैं।

निशिकांत एक साहसी देशभक्त के रूप में भी अवतरित हुआ है। दंगे में हिन्दू धर्म के लिए शहीद होनेवाले रायबहादूर ज्ञानचंद, बाब मोहन कृष्ण, तथा कामरेड प्रेमा के अंतिम यात्रा में शरीक होता है और हिन्दूधर्म जिन्दा बाद के नारे को सुनकर सोचता है– ‘‘कौन कहता है हिन्दू कायर हैं? कौन कहता है, हिन्दू अपने धर्म से प्रेम नहीं करते? समस्त हिन्दू आज एक स्वर से अपने धर्म की जय – घोषणा कर रहे हैं। शायद कल मुसलमानों न समझ लिया था कि हिन्दू –धर्म मर चुका है। उसी भ्रम का निवारण करता हुआ उनका स्वर घोष उठता है, ‘‘हिन्दू धर्म,जिन्दा बाद।’’[५]

स्वप्न उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र अलका राष्ट्रीय चेतना से ओ प्रोत एक ऐसी महिला है जिसका पूरा जीवन नित नवीन प्रयोग करने में ही लिप्त दिखाई देता है। अलका एक ऐसी स्पप्न मयी साहसी नारी है जा दूसरों की भलाई व मदद करने में सुख का अनुभव करती है।उसके मन मन्दिर में देश के प्रति इतना आधिक लगाव है कि वह पूरा देश घुमना चाइती हैऔर दु:खी, गरीब लोगों की मदद करना चाहती है तथा शेषित लोगों को शोषण करने वालों से मंक्त कराना चाहती है।

अलका की यह भी विशेषता हैकि वह अपनी गलतियों के लिए क्षमा जिस सहजता से और आसानी से मनव लेती है कोई भी उसे क्षमा करने से अपने आपको राक नहीं पाता। अलका की विद्रोह भरी कविजाएँ कहीं कहीं उसके मार्ग में रूकावट भी डालती हैं किन्तु दूसरी ओर लोंगों के बीच एक नये विचारो और भावों को भी जन्म देते हैं, जिससे स्वतंत्रता की पुकार लोगों के माध्यम से सहज ही सुनाई देने लगती है।‘अलका’ अपने अधिकारों के प्रति एक जागरूक चेतना सम्पन्न नारी हैजो अपने पति की अनुमति से क्रांतिकारियों की एक टुकडी का नेतृत्व भी करती हुई दिखाई देती है,

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

वास्तव में अलका कर्म में विश्वास करती है,बनावटी दुनियाँ के झूठे आश्वासनों और आंदलनों में नहीं।अन्तत: कहा जा सकता हैकि अलका एक खुले, सम्पन्न समृध्द परिवेश से संबध्द एक प्रतिभासम्पन्न नारी है। जीवित रहने के लिए आर्थिक और सामाजिक र्मो पर उसे अपने अस्तित्व की लडाई लडनी पडती है। क्रांति से लेकर आंदोलनों के साथ वह अन्ततक जुडी रहती है और समाज में स्त्री पुरूष भेदभाव और उँच नीच की खाई को समारत करने के लिए हमेशा आगे आगे बडती हुई दिखाई देती है। जिसका परिणाम यह होता हैकि उसे न तो जीने की आशा होती है और नही कामना । वह सरल हदया अपने ही प्रयोगों के दुएचक्र में फँसकर अपना जीवन समाप्त कर बैठती है।

सन १९३६ में भारतीय प्रगतिशील लेखक–संघ की स्थापना हुई थी। जिसका सभापतित्व मु. प्रेमचंद ने किया था। धीरे–धीरे इसका संघठन अखिल भारतीय स्तर पर किया गया और विभिन्न भाषा–भाषी प्रांतों में इसका प्रचार–प्रसार किया गया । किसानों मजदूरों तथा समाज के उपेक्षित और पद्दलित वर्ग की चेतना को मुखरित और विकसित करने की भावना ने साहित्यकारों को काफी प्रभावित किया। यथार्थवाद और आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की दृष्टि से उपन्यासों में विचार व्यक्त किये जाने लगे।

हिन्दीं साहित्य प्रगतिवादी, मार्क्सवादी विचारधाराओं से प्रभावित तो अवश्य हुआ, किन्तु यह सर्वथा विदेशी वस्तु नहीं बना रहा। भारतीय देशकाल के अनुरूप ही इसका निजी अस्तित्व भी है। प्रगतिवादी भारतीय सामाजिक जीवन से उत्पन्न साहित्य की एक वैचारिक दृष्टि है,जिसका मुल्यांकन सिर्फ मार्क्सवादी चिन्तन के अन्तर्गत ही नहीं किया जा सकता प्रत्युत इससे पृथक रूप में भी इसे मूल्यांकित किया जा सकता है।

वस्तुत: भारतीय साहित्यकारों एवं हिन्दी के रचनाकारों ने भारतीय जनता की बदहाली, बेकसी और बेसमानी को अपनी नंगी आंखों से देखा। हिन्दुस्तान के सर्वहारा–वर्ग की जिन्दगी को नजदीक से देखकर ही हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने अपने लेखन में प्रेरणा प्राप्त की है।

इतना ही नही बल्कि शोषण और उत्पीड़न से चीत्कार करती धरती की वेदना को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यंजित करना और क्रांति के लिए मशाल जलाती चलने वाली सर्वहारा की चेतना को उद्‌बुध्द करना ही हिंदी के प्रगतिवादी उपन्यासकारों का परमलक्ष्य रहा है । अत: उपन्यासों में अपने देश, समाज की परिस्थितियों के अनुकूल प्रगतिवादी दृष्टि बहुत कुछ स्वाभाविक रूप से ग्रहण होती चली है। फलत: हिन्दी के उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में समाजवादी यथार्थ की अभिव्यक्ति मुक्तभाव से की है। इस अभिव्यक्ति के लिए जनता में लेखक की गहरी पैठ होना जितना आवश्यक है उतना आवश्यक उसका मार्क्सवादी होना नही है। अत: हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने सबसे पहले सामाजिक यथार्थ चित्रण के दायित्व को सफलतापूर्वक निभाना पसंद किया है, तदूपरांत मार्क्स के समाजवादी सिध्दांतों की भी गहरी परख की है।''स्पष्ट है की प्रगतिवादी लेखकों की दृष्टि का यथार्थवाद से गहरा संबंध है । यर्थाथवादी दृष्टि से छोटी–छोटी घटनाओं और अत्यंत नगण्य समझे जानेवाले चरित्रों के ब्योरेवार वर्णन के प्रयास किये जाते हैं। ये सारे वर्णन सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति और प्रत्यक्ष जीवनानुभवों से भरे होते हैं। उपेन्द्रनाथ अश्क ने 'गिरती दीवारें' की भूमिका में यथार्थवादी लेखन–दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए जो कुछ कहा है उससे प्रगतिशील साहित्य की यथार्थ चित्रण–दृष्टि का भी स्पष्टीकरण हो जाता हैं। उनका कथन है कि –''आधुनिक यथार्थवादी लेखकों ने अपनी रचना प्रक्रिया में छोटे–छोटे अनुभवों, नन्हीं–नन्हीं प्रकट में अकिंचन और निरर्थक,परंन्तु यथार्थवादी जीवन पर गहरा असर छोड़ जानेवाली तफसीलों के वर्णन पर अधिक जोर दिया, क्योंकि उनकी धारणा है की उन नन्हीं – नन्हीं निरर्थक तफसीलों और उन अकिचंन, अतिहेय पात्रों को – जिनसे हमारा जीवन – पथ अटा पड़ा है और जिन्हें आसमान में लगी हमारी दृष्टि देखकर भी नहीं देख पाती – उसकी दैनिक जीवन की दलदल से निकाले, बना –सवार कर आपकी अन्यमनस्क उदासीन आंखों के सामने इस प्रकार रखना की आप उन्हें बरबस देखने और नोटिस लेने को विवश हो जाएं, कम कष्ट साध्य नहीं । सूर्य की भव्यता का दर्शन कराने वाली दूरबीन के मुकाबले में नन्हें – नन्हें अदृश्य अकिंचन कीटाणुओं खुर्दबीन कम महत्वपूर्ण और उपादेय नही।''[६]

प्रगतिवादी लेखक संतुलित जीवन – दृष्टि मर्मस्पर्शिता और प्रभावभिव्यंजना आदि की क्षमता के द्वारा जीवन का समन्वित चित्रण करता है। अन्यथा सारे वर्णन बिखरे–से लगते हैं। यथार्थवादी चित्रण की इस

पध्दति में लेखक अपनी अत्यधिक जागरूकता और कलात्मक प्रतिभा का परिचय देता है । प्रगतिवादी उपन्यास – लेखन को अपनी इसी प्रतिभा से आगे बढ़ाने वाले प्रेमचंद ने भारतीय जनता के विस्तृत चित्रपट पर कथात्मक सृजन किए । कथा की यथार्थवादी धारा को उन्होंने कार्यकारण की श्रृंखला से युक्त सुव्यवस्थित और सुनियोजित किया और भारतीय जीवन को सपुर्णता में चित्रित किया। हिन्दीं के प्रगतिवादी उपन्यासों ने प्रगतिवादी आंदोलन को प्रसारित किया है। इनमें बड़े विश्वास के साथ सर्वहारा –वर्ग के पात्रों व उनकी विविध उलझी हुई समस्यायों को बड़े ही उत्साह के साथ उठाया गया है ।

विष्णु प्रभाकर बहुआयायी प्रतिभा के साहित्यकार हैं, इसीलिए उनके कथा–साहित्य के पात्रों की छवि व व्यक्तित्व उनके अपने जीवन में खोजी जा सकती है । विष्णु जी के पात्र कल्पना की किसी उॅची उड़ान से गढ़ें हुए नहीं हैं। हमारे और आपके बीच में विचरण करनेवाले साधारण जन है । अतैव यही कारण है कि विष्णु के पात्र अपने प्रति पाठकों के मन में अथाह भरोसा पैदा करते हैं। विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में अनेक ऐसे प्रगतिवादी विचारधारा से सम्पन्न पात्र दिखाई देते हैं जिनके माध्यम से विष्णुजी अपनी बात पाठको तक बड़ी ही सहजता से पहुॅचा देते हैं।

विष्णु प्रभाकर के ये प्रगतिवादी पात्र, जिनमें नारी और पुरूष दोनों ही अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने के साथ– साथ अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक एवं सचेत हैं। वे चाहे सत्येंन्द्र हों, या डॉ.प्रभात, पंडित मेलाराम हो या गोपाल, स्त्री पात्रों में भी वर्तिका, विभा, अलका, शशि, आभा आदि – नारियॉ जहॉ आधुनिक विचारों से ओतप्रोत दिखाई देती हैं वहीं वे अपने पैरो पर खड़ी होना भी जानती है और यह समझती है कि जीवन में वह क्या चाहती हैं और उसे पाने की भरसक कोशिश भी करती हैं। किन्तु स्त्री की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के कारण पुरूष वर्ग के अहम् को जो चोट लगती है, उसके कारण उत्पन्न तनाव और टूटन का सामना स्त्री और पुरूष दोनों को ही करना पड़ता है। विष्णुजी के सभी उपन्यासों में प्रगतिवादी चरित्रों के द्वारा कर्मयोग और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता का संदेश मिलता है। व्यक्तित्व के विकास के लिए आत्मनिर्भरता बहुत ही सहायक है। 'अर्धनारीश्वर में विभाके माध्यम से विष्णु जी स्वंय कहते हैं –''मैं अपने पैरों पर खड़ा होना जानती हूॅ, घिसटती लहूलुहान जिंदगी के साथ घिसटना नहीं, उससे मुक्ति पाकर नये सार्थक जीवन की तलाश करना चाहती हूॅ । आवश्यकता आत्म–विश्वास और संकल्प की है । वह प्रेम करने का संकल्प ले सकती है तो कर्म करने का क्यों नहीं? विष्णुजी ने प्रगतिवादी स्त्री पुरूषों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की सलाह दी है और इनके स्त्री पुरूष वैचारिक रूप से भी उदात्त भावनाओं से ओत–प्रोत दिखाई देते हैं। विष्णुप्रभाकर ने अपने ऐसे– महान चारित्रिक पात्रों के माध्यमसे प्रेम, दया, ममता, सहिष्णुता सद्भावना,त्याग, प्रेरणा और उत्साह के माध्यम से आंतरिक सौदर्यबोध को उजागर किया है।

ऐसे प्रगतिशील विचारधारा वाले प्रमुख पात्रों में –गोपाल, सत्येन्द्र डॉ. प्रभात, पं.मेलाराम, वर्तिका विभा,नंदिता, आभा, अलका आदि विष्णू प्रभाकर के उपन्यासों में आये ये उपर्युक्त पात्र अपने प्रगतिशील विचार–भावों के माध्यम से पूरे कथा–प्रवाह में पाठकों के मानस पटल पर बने रहते हैं और उन्हें जीवन को बेहतरढंग से जीने की सलाह देते हैं। अतैव विस्तृत ढंग से इन प्रगतिशील पात्रों का परिचय अग्रलिखित रूप में दिया जा रहा है।

'तट के बंधन ' उपन्यास का पात्र, गोपाल प्रसिध्द लेखक तथा अन्य कई भाषाओं का ज्ञाता है । पूरे उपन्यास में शुरू से अंत तक गोपाल का रूप एक प्रगतिशील नायक के रूप में ही सर्व विदित है । गोपाल का अपने लिए कम, अन्य दूसरे लोगों के लिए ही मानों इसकी उत्पति कथा – सृष्टि कर्ता ने की है । कथा–नायिका नीलम का विवाह जब एक महामुर्ख, स्थूलकाय, रोगी व धनी व्यक्ति के साथ होना लगभग तय होता है तो ऐसे बेमेल विवाह को देखकर गोपाल बड़ा दु:खी होता है । अतैव वह नीलम के भीतर साहस को जगाकर ऐसे विवाह को इन्कार करने का बल पैदा करता है और उसे उत्साहित करते हुए कहता है कि–''मुझसे क्या पूछती हो? पूछो अपने आप से। क्यों चूपचाप अत्याचार को सह रही हो? क्यों अपनी बात कहने में डर लगा है । क्यों अपने को इतना कम महत्व देती हो?– जब इन बातों का जवाब मिलेगा तो समझ पाओंगी।''[७]

गोपाल समाज में किसी के साथ भी अन्याय होते नहीं देख पाता है.गोपाल में जहॉ अद्भूत धीरज, साहस का संचार दिखाई देता है वहीं उसमें अपने

बचन के प्रति – दृढ़ता भी दिखाई देती है।गोपाल मातृहीन बालिका अनीला से अटूट प्रेम करता है किन्तु अनीला की शादी हो जाने पर वह अपना शेष जीवन अकेले ही व्यतीत करने का निर्णय करता है। गोपाल को उपन्यास में एक सशक्त व प्रेरक तथा बुध्दिजीवी प्रगतिशील पात्र के रूप में चित्रित किया गया है जो सदैव ही अपने कर्म के प्रति व समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाता है ।

'तट के बंधन ' उपन्यास का प्रमुख पात्र सत्येन्द्र धीर,वीर, साहसी व अपने कर्तव्य के प्रति आस्थावान दिखाई देता है । आई.ए.एस. की तैयारी कर रहा सत्येन्द्र मुसीबत के समय अपनी बहन नीलम को बचाने की पूरी कोशिश करता है, अपने प्राणों की परवाह किये बिना वह दुश्मनों से भिड़ जाता है और घायलावस्था में अस्पताल में भर्ती होने के पश्चात उसकी जान बच पाती है । सत्येन्द्र अपनी जिम्मेदारियों के प्रति हमेशा उत्साहित दिखाई देता है । नीलम का विवाह जब दहेज के अभाव में एस अनमेल व्यक्ति के साथ होना सुनिश्चित होता है तो सत्येन्द्र ऐसे विवाह को तनिक भी स्वीकार नहीं करता है । मॉ के विरोध करने पर भी सत्येन्द्र गंभीर शब्दों में मॉ को समझाते हुए कहता है –''मॉफ कर दो, मॉ! तुम्हारा दर्द समझता हूॅ। परंतु चिंता मत करो–अखबार में विज्ञापन देने पर जरूर कोई अच्छा लड़का मिल जायेगा । फिर भी मॉ नीलम को कुछ काम करना ही चाहिए । जो गतिशील हैं, युग उनका स्वागत करता है । .. मान लो अम्मा आगे बढ़नें पर हमें मिटना भी पड़े तो भी अच्छा है । समाज तो जागेगा । हम क्या हैं, समाज के एक अंग हैं संसार में क्षुद्राति–क्षुद्र कणाकण । यों क्या है, पर वैज्ञानिक ने उसकी शक्ति की जो थाह ली है, उसके लिए अणु–बम का इतिहास पढ़कर देखना होगा।''८

सत्येन्द्र नये विचारों–भावों से ओत–प्रोत एक ऐसे प्रगतिशील नायक के रूप में पाठकों के सम्मुख आता है जो पूरे समाज में दैत्याकार दहेज को समाप्त करने की दिशा में अलख जगाना चाहता है। सत्येंन्द्र स्वंय को मिटाकर भी समाज को जागृत करना चाहता है, जो इसके मानवीय जीवन की सबसे उत्तम सोच है।

सत्येन्द्र प्रयोगवादी युवक है, वह हमेशा ही जीवन में नयें–नयें प्रयोग करना चाहता है। सत्येन्द्र अपने प्रयोगों को सफल बनाने के लिए हमेशा ही प्रयत्नशील दिखाई देता त्याग,कर्म,सच्चरित्रता जहॉ सत्येन्द्र के चरित्र की मुख्य विशिष्टता है वहीं आशा, प्रयोग व साहस इसके मानवीय जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है ।

'संकल्प' उपन्यास के नायक डॉ.प्रभात एक स्थानीय अस्पताल में डॉक्टर के रूप में कार्यरत हैं। वे व्यावहारिक रूप से बड़े ही सौम्य व कुशल व्यक्ति हैं। डा.प्रभात कर्म को मनुष्य का सबसे बड़ा गुण मानते हैं। लोगों से मिलना–जुलना उनकी समस्यायों को सुनना और फिर उसे हल करने की दिशा में चिन्तन करना डा.प्रभात के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशिष्टता है। इस प्रकार डा.प्रभात के संबंध में अन्ततः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सहज, सरल, साहस से परिपूर्ण मिलनसार व्यक्तित्व के धनी डा. प्रभात हमेशा ही दूसरों के प्रति सकारात्मक भाव ही रखते हैं, किसी के भी प्रति ईर्ष्या या विरोध का भाव नहीं रखते।

विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री–पुरूष के विविध रूपों का अंकन किया गया है और वे देखने को मिलने हैं। प्रगतिशील विचारधारावाले चरित्र सामाजिक बदलाव के साथ स्वंय में बदलाव करते हुए दिखाई देते हैं। गरीब और कमजोर लोगों के प्रति इनके ह्दय में स्नेह अपनापन की भावना दिखाई देती है। गोपाल, सत्येंद्र, कमला, विभा जैसे पात्र समाज में अपने सत्कर्मो द्वारा पहचाने जाते हैं। इनका उद्देश्य समाजिक ढ़ाचे में बदलाव करना है। वास्तव में विष्णु प्रभाकर का सारा साहित्य ही नारी पर केंद्रित है, जिसमें नारी के स्वतंत्र रूप को पकड़ने का प्रयास किया है। अर्धनारीश्वर निशिकांत,'संस्कार', और 'संकल्प' उपन्यासों में नारी के चरित्र का सर्वाधिक प्रभावशाली रूप उभरा है स्वतंत्र एवं अर्जित प्रगतिशील नारी का स्त्री–पुरूष के चित्रण का केन्द्रिय स्वर भी वर्तमान में जीने का आग्रह ही है। विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतनावाले चरित्र भी हैं। ऐसे चरित्रों के माध्यम से विष्णुजी राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व की भावना को भी अभित्यक्ति दी है। विष्णु प्रभाकर का साहित्य जनतांत्रिक मूल्यों का आग्रह करता हुआ प्रतीत होता है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ :

1. हिन्दी उपन्यास – ज्ञानचंद गुप्त–पृष्ठ–२००–२०१
2. जल टूटता हुआ – रामदरश मिश्र –पृष्ठ–२५१
3. रामदरष मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य–जीवन –डॉ.वी.पी.चौहान –पृष्ठ–229
4. निशिकान्त – विष्णु प्रभाकर –पृष्ठ–49–50
5. निशिकान्त – विष्णु प्रभाकर –पृष्ठ–१२०
6. हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास – बदरी प्रसाद –पृष्ठ–42
7. तट के बंधन –विष्णु प्रभाकर–पृष्ठ–३५
8. कोई तो–विष्णु प्रभाकर–पृष्ठ–१०७

© RRIJM 2015, All Rights Reserved